સ્પર્ધ નામઃ

શ્રી શત્રુંજય - મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

C/o. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેક્ટરી કમ્પાઉન્ડ, મોંઢા રોડ, ઔરંગાબાદ - ૪૩૧ ૦૦૧

સમ્યગ્જ્ઞાન વિશારદ

Answer Sheet 2020-21

◆◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆◆

એનરોલમેન્ટ નંબર ____ 4 ગામ ____

1.

વિદ્યાર્થીનું નામ ____

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

(૧)	'મૂલ'
(૨)	અપ્રમત્ત સંયત
(૩)	જિન શાસન
(૪)	બૃહદ્‌શાંતિ સૂત્ર
(૫)	કપાર
(૬)	આલોચના
(૭)	તત્વાર્થ ભાષ્ય
(૮)	કષાય
(૯)	બહુજન દોષ
(૧૦)	રૂપાતીત
(૧૧)	શ્રુત કેવલી
(૧૨)	યાકિની મહત્તરા
(૧૩)	શાસનનો ઉચ્છેદ
(૧૪)	વાદીવેતાલ શ્રી-શાંતિસૂરિ
(૧૫)	આત્મશુદ્ધિ
(૧૬)	ધ્યાનરૂપી
(૧૭)	સંવર તત્વ
(૧૮)	સૂક્ષ્મ સંપરાય-ગુણસ્થાન
(૧૯)	ક્રિયા/આલંબન
(૨૦)	પ્રકુર્વી

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

(૧)	ગર્ભજ મનુષ્ય
(૨)	અપ્રમત્ત
(૩)	આગમવ્યવહારી
(૪)	શ્રી જિનભદ્રજી ગુરુ
(૫)	આહારક
(૬)	અવ્યક્ત
(૭)	અપ્રમત્ત ગુણસ્થાનકે
(૮)	જિન સાધુ
(૯)	તત્વાર્થ સૂત્ર
(૧૦)	પ્રમોદ
(૧૧)	જંબુલતા
(૧૨)	જિનવરો ના
(૧૩)	અજિત-શાંતિ-સ્તવ
(૧૪)	મૌન ને
(૧૫)	મહર્ષિ પતંજલિ ના

(૫)	તમારું
(૬)	મંદ પણાથી
(૭)	~~સાધુ~~ જાણવું
(૮)	સાત
(૯)	અવ્યક્ત
(૧૦)	કપટ રહિત
(૧૧)	વેદના
(૧૨)	આવીને
(૧૩)	સંજ્ઞી ને
(૧૪)	નિશલ્યપણું
(૧૫)	જાણીને
(૧૬)	નિરાલંબનસદ્ધ્યાન
(૧૭)	જ્ઞાન દઈ ને
(૧૮)	આપાયદર્શી
(૧૯)	અચયેલા
(૨૦)	કરીને

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

(૧)	દિવસ
(૨)	સૂર્ય
(૩)	વૈક્રિય
(૪)	જઈને

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

(૧)	6	(૬)	9
(૨)	8	(૭)	3
(૩)	10	(૮)	2
(૪)	7	(૯)	4
(૫)	1	(૧૦)	5

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

(૧)	8
(૨)	76
(૩)	357
(૪)	7
(૫)	~~63~~ 59
(૬)	9
(૭)	325
(૮)	4
(૯)	8
(૧૦)	1444

	પ્રશ્ન-૬ ✓ કે X		પ્રશ્ન-૭ આ વાક્ય ક્યા પાને છે તે નંબર	
(૧)	✓	(૧)	14	૧૩
(૨)	✓	(૨)	7	૬
(૩)	X	(૩)	21	૨૦
(૪)	✓	(૪)	10	૧૦
(૫)	✓	(૫)	2	૨
(૬)	X	(૬)	18	૧૬
(૭)	X	(૭)	24	૨૨
(૮)	X	(૮)	6	૬
(૯)	✓	(૯)	20	૧૯
(૧૦)	X	(૧૦)	13	

પ્રશ્ન ૧-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુણ	કુલ ગુણ
	+	+	+	+	+	+	+	=

રીમાર્ક ____ તપાસનારની સહી ____

प्रश्न - ८ समुद्घात ऍटले देह मां रहेला आत्मप्रदेशो जोरथी अचानक शरीर नी बहार नीकळी वधारे पडता जुना कर्म पुद्गलो नी उदीरणा करी, कर्मो ने भोगवी ने नाश करवानी ऍक

१. प्रकार नी विशिष्ट प्रक्रिया ते जीव समुद्घात कहेवाय छे. समुद्घात सात प्रकारे छे.
केवली समुद्घात - केवली भगवंत ने चार अघाती कर्म नी स्थिति सरखी न होय त्यारे ऍ समुद्घात होय छे. ऍ स्थिति ने सरखी करवा केवली भगवंत आयुष्य ना छेल्ला अंतर्मुहूर्त मां आठ समय नो केवली समुद्घात करे छे. समय अनुक्रमे -(१). आत्मप्रदेशो नो स्वदेह प्रमाण जाडो नो ऍक दंड १४राजलोक प्रमाण बनावे (२). उत्तर - दक्षिण वधारी कपाट जेवो. आकार (३). पूर्व-पश्चिम वधारी रवैया जेवो आकार बनावे.(४) चार आतंरा पूरी ने संपूर्ण १४राजलोक मां विस्तारे छे. ५-६-७-८- समय मां उलटी प्रक्रिया प्रारंभ करे.(५). चार आतंरा (६) ऍक कपाट (७). बीजो कपाट (८) दंड संहरी ने केवली भगवंत - पोताना देह प्रमाण थई जाय छे.

२. सद्ध्यान ना त्रण प्रकार छे.(१) आरंभक - धीरजनी ने वीर आसन मां बेसीने निष्कंप समाधि लगाडी छे(२) संनिष्ठ - वायु आसन मां इन्द्रिय-मन-क्षुधा-निद्रा ने जीते छे. वारंवार अंतकरण मां मैत्री-प्रमोद-करुणा-माध्यस्थ भावना भावतो जीव ध्यान मां प्रवेशे छे.(३) निष्पन्न योग - अंतकरण मांथी चिंतन ने दूर करी मन मां संपूर्ण विद्यारूपी अमृत भरे जेनुं चैतन्य निरंतर पान करतो समाधि मां लीन बने छे. उदय मां आवेला मोहनीय कर्म नी प्रकृतिओने खपावे छे. अने उदय मां नहीं आवेली प्रकृतिओने उपशमावे छे. त्यारे निरालंबन सद्ध्यान करी शके छे.

~o~ ~o~ ~o~

३. श्री हरिभद्रसूरिजीऍ योग मां विशेष रुची धरावनारा जीवो माटे (१) 'योगदृष्टि समुच्चय' जे लगभग साडा सातसो श्लोको-गाथाथी वधु विस्तृत रचना करी छे.(२) मध्यमरुचीवाळा जीवो माटे 'योगबिन्दु' नाम नो ग्रंथ जे लगभग सवा त्रणसो गाथाओ (३) 'योगशतक' - मां ऍकसो गाथा छे. (४) अत्यंत संक्षेप रुचिवाळा जीवो माटे सार मात्र वीश गाथा मां आपी 'योगविंशिका' ग्रंथ नी रचना करी छे. योग ना क्षेत्र मां तेमनी आ रचनाओ महर्षि पतंजली ना योग सूत्र नी रचनाओ ने याद अपावे छे. योग ने लगता जैन-जैनेत्तर दरेक परंपरा नी वातोने पोतानी बुद्धि ना प्रभाव द्वारा विशिष्ट रीते निरुपी जगत समक्ष रजु करी छे.

~o~ ~o~ ~o~

४. (१) जेम भारउपाडनार नो भार दूर करवाथी हलको थाय तेम शल्य-पाप उद्धरवाथी - आलो[illegible]थी आलोचना लेनार हळवो थाय छे.(२) पापदोष दूर थवाथी प्रमोद उत्पन्न थाय.(३) पोताना अने पर ना दोषो नी निवृति थाय छे. बीजा लोको पण आलोचना लेवाने सन्मुख थाय छे.(४) निष्कपटी पणुं थाय.(५) अतिचाररूप मेल दूर थवाथी आत्मशुद्धि थाय.(६) दुष्करकारता थाय.(७) तीर्थंकर परमात्मा नी आज्ञानुं पालन थाय.(८) तेमज आत्मा निशल्यपणुं पामे छे. आलोचना नो लाभ- सम्यक्त्व विधिपूर्वक गुरुऍ आपेलुं प्रायश्चित ग्रहण करे तो ज शुद्ध थाय. अन्यथा नहि थाय.

~o~ ~o~ ~o~

५. भरत, ऐरावत अने महाविदेह क्षेत्र मां जन्मेला सर्व अरिहंतो ना जन्मसमये पोतानुं आसन कंपता सौधर्मेन्द्र अवधिज्ञान वडे अरिहंत भगवंत नो जन्म थयेलो जाणीने अरिहंत भगवंत ने हाथ मां ग्रहण करीने मेरुपर्वत ना शिखर उपर जईने जन्माभिषेक कर्या पछी शांति नी उद्घोषणा करे छे. आज नो दिवस पवित्र छे. आ अवसर मांगलिक छे. सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, त्रिलोक ना नाथ, अर्चित-पूज्य-ईश्वर-उद्योत करनारा अरिहंत भगवंतो प्रसन्न थाओ. शत्रुवडे करवामां आवता विजय प्रसंगे, दुष्काल मां, प्राण धारण करवाना प्रसंगे, अटवी मां, प्रवास करवाना प्रसंगे, विकट मार्गो ओळंगवाना प्रसंगे नवस्वरूपवाळी सरस्वती